परिवर्तन
PARIVARTAN

कृषि संदेश
(खरीफ विशेषांक)

वर्ष 2021 (जनवरी –दिसम्बर) खंड 4 अंक 15 & 16

कृषि समुदाय के लिए तक्षशिला की एक पहल

सम्पादकीय

कृषि मूलश्च जीवनम्

वर्ष 2021 के दौरान भी कोविड-19 (कोरोना) अपने चरम सीमा पर रहा, पर्याप्त बारिश हुई, धान की फसल को फायदा हुआ लेकिन अत्याधिक बारिश की वजह से मक्का एवं अरहर की फसल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। परिवर्तन कृषि इकाई की टीम ने एक मुहिम चलाकर किसानों को उचित समय पर नवम्बर के प्रथम पखवाड़े में जीरो टील मशीन से गेंहू की बुआई पूरी करने के लिए प्रेरित किया। जलवायु परिवर्तन का प्रभाव वर्षा की अनिश्चितता एवं तापक्रम में उतार-चढ़ाव पर निरंतर देखा जा रहा है। विगत वर्षो में यह अनुभव किया गया है कि फरवरी माह में अचानक तापक्रम बढ़ जाने से गेंहू की उपज काफी कम हो जाती है इसीलिए आवश्यकता है कि गेंहू के तापक्रम के साथ की सहनशील प्रजातियों के प्रदर्शन किसानों के खेत पर आयोजित किये जाएँ और कुपोषण पर निजात पाने के लिए प्रत्येक किसान को उनके घर के आस- पास की खाली जमीन पर पोषक वाटिका स्थापित करने के लिए प्रशिक्षित किया जाए।

हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र के तकनीकी सहयोग से आंगनबाड़ी केन्द्रों पर पोषक वाटिका स्थापित करने का प्रयास गत वर्ष प्रारंभ किया गया था। इस दिशा में सार्थक प्रयास करके इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाया जा रहा है, जिससे गाँव के किसान, महिलायें एवं बच्चे प्रेरित होकर अपने घर के आस-पास की खाली जमीन में पोषक वाटिका लगाकर लाभान्वित हों।

किसानों को गुणवत्तापूर्ण कृषि निवेश (बीज, उर्वरक एवं फसल रक्षा रसायन) की समय से उपलब्धता के साथ-साथ, तकनीकी ज्ञान एवं उनके उत्पाद का उचित मूल्य दिलाने के लिए जन हितार्थ परिवर्तन फार्मर्स प्रोडूसर कम्पनी, प्रयासरत है। परिवर्तन कार्यक्षेत्र के किसानों को इस संगठन द्वारा उनकी आवश्यकता के अनुसार उर्वरकों, बीजों एवं कृषि रक्षा रसायनों की आपूर्ति की जा रही है और किसानों को लाभ मिल रहा है। इस संगठन में अशधारकों की संख्या अधिक से अधिक बढ़ाकर मजबूत बनाने की आवश्यकता है। हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र, परिवर्तन कार्यक्षेत्र के किसानों को तकनीकी ज्ञान देकर उनकी फसलों की उत्पादकता बढ़ाने एवं युवाओं को खेती एवं खेती से जुड़े उद्यमों के प्रति आकर्षित करने हेतु संकल्पित है जिससे उनकी आमदनी बढ़ सके। मुझे विश्वास है कि परिवर्तन कृषि सन्देश के 15 और 16 वें अंक का प्रकाशन कृषकों, प्रसार कार्यकर्ताओं तथा कृषि से जुड़े लोगों के लिए उपयोगी साबित होगा।

विवेक कुशवाहा

किसान जागरूकता संगोष्ठी

दिंनाक 28/01/2021 को हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र में किसान जागरूकता संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न गाँवों से आए 37 किसानों ने भाग लिया। इफ्फको मुख्य क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री अमरदीप कुमार और जनहितार्थ किसान उत्पाद समूह के अध्यक्ष श्री सुधीर श्रीवास्तव ने इस जागरूकता संगोष्ठी में प्रवर्तक की भूमिका निभाई। सभी किसानों का स्वागत कर श्री विवेक ने बताया कि हम नवीनतम तकनीक से उत्पादन तो

बढ़ा ले रहे हैं, परन्तु हम भूमि से जितना पोषण लेकर उत्पादन कर रहे हैं उतना पोषण हम भूमि को वापस नहीं कर पा रहे हैं, जिससे हमारी भूमि की उर्वरता दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है। ऐसे में हमें समेकित पोषक प्रबन्धन का सहारा लेकर भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाये रखना होगा, फसल के अवशेष जलाने के बजाय भूमि में मिला दिया जाये तो भूमि की उर्वरता और भी बेहतर होगी। श्री अमरदीप, मुख्य क्षेत्रीय प्रबन्धक इफ्फको, ने सही मात्रा में रासायनिक उर्वरक का प्रयोग और सही अथवा नकली उर्वरक के पहचान के बारे में जानकारी प्रदान की। नाइट्रोजन, फॉसफोरस,पोटाश के प्रयोग, उसकी मात्रा और पौधों पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है इसकी विस्तृत जानकारियां भी मिलीं। जन हितार्थ किसान उत्पाद समूह के अध्यक्ष श्री सुधीर ने इफ्फको के मुख्य क्षेत्रीय प्रबन्धक से अपील किया- कृपया हम सभी किसानों को समय से उर्वरक उपलब्ध कराते रहें और FPO किसानो को समय से कृषि इनपुट भी मिलता रहे इसका भी प्रबंध करें।

प्रक्षेत्र दिवस सह किसान गोष्ठी

दिंनाक 17/02/2021 को परिवर्तन परिसर में हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र में रबी प्रक्षेत्र दिवस सह किसान गोष्ठी का आयोजन किया। जिसमें परिवर्तन कार्यक्षेत्र से 64 किसान उपस्थित रहे। जनहितार्थ FPO के 4 डायरेक्टर भी उपस्थित रहे। इस प्रक्षेत्र दिवस की गोष्ठी में हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र के तकनीकी सहायक श्री विवेक ने उपस्थित किसानों का स्वागत कर, गेंहू उत्पादन के प्रमुख प्रभावी बिंदुओं,बीज, उर्वरक, सिंचाई ,खरपतवार के बारे में किसानों को जानकारी दी। जनहितार्थ किसान उत्पाद समूह क.लि. के चैयरमैन श्री सुधीर श्रीवास्तव ने किसानों को संबोधित करते हुए FPO से अंशधारक के रूप में जुड़ाव हेतु अपील किया, साथ ही गन्ने के रस से बने एक उत्पाद को किसानों के बीच रखा और इस उत्पाद को अपने FPO में करने की अपील की। आई. सी.ए. आर. नयी दिल्ली के भारतीय गेंहू एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा वर्ष 2019 में गेहू की नयी प्रजाति - करन बन्दना (DBW 187) विकसित की गयी है। यह प्रजाति पूर्वी उत्तरप्रदेश, बिहार एवं बंगाल के लिए सिंचित अवस्था में समय से बुआई हेतु संस्तुत की गयी है। इसकी पैदावार HD2167 एवं HD2733 से भी ज्यादा है इसकी औसत उपज 48.80 कुईंटल प्रति हेक्टयेर आंकी गयी है। इसकी क्षमता उपज 64.7 कुईंटल/हेक्टयेर है, इस प्रजाति का प्रदर्शन परिवर्तन परिसर एवं खेमभटकन के किसान के खेत पर आयोजित किया गया था।

गोष्ठी के बाद सभी किसानों को प्रदर्शन संख्या १ समेकित कृषि प्रणाली में लगे उन्नतशील प्रभेद DBW 187 (करन वंदना) के प्रक्षेत्र पर सजीव फसल प्रभेद प्रदर्शन कराया गया, साथ ही इस गेंहू की खूबियों को बतलाया गया और किसान की शंकाओं का समाधान किया गया। साथ ही हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र के तकनीकी सहयोग से खेत पर लगे काले गेहू, सरसों के प्रक्षेत्र पर भी सजीव फसल प्रभेद प्रदर्शन कराया गया।

काला गेंहूँ की खेती का परीक्षण

नेशनल एग्री फ़ूड बायोटेक्नोलॉजी इंस्टिट्यूट, मोहाली की वैज्ञानिक डॉ मोनिका गर्ग के नेतृत्व में 7 साल के रिसर्च के बाद काला गेंहू (नाबी एमजी) विकसित किया गया है। रिपोर्ट में बताया गया है कि यह गेंहू सामान्य गेंहू की अपेक्षा ज्यादा पौष्टिक होता है तथा यह मोटापा, कैंसर, डायबिटीज और दिल की बीमारियों की रोकथाम में सहायक होता है। इसकी उपज भी सामान्य गेंहू के बराबर मिलती है इसका परीक्षण एवं प्रदर्शन परिवर्तन कैम्पस तथा खेम भटकन, बंगरा टोला, संजलपुर गाँव के तीन किसानों के खेत पर किया जा रहा है

महिलाओं को खेती की मुख्य धारा में लाने व उनके सम्मान में दिवस का आयोजन –

दिंनाक 23 मार्च को विश्व महिला दिवस के उपलक्ष्य में महिलाओं के लिए शिक्षा के महत्व और आर्थिक रूप से उन्हे मजबूती कैसे मिले यह जानकारी महिला समूहों में दी गई। साथ-साथ उनकी घरेलू जीविका में आर्थिक मजबूती के लिए कृषि एक प्रमुख विकल्प में से एक है, महिलायें कृषि के माध्यम से कैसे अपने आय के स्रोतों को बढ़ा कर सशक्त बन सकती हैं, यह चर्चा भी की गई। इस दिवस के उपलक्ष्य में 2 महिला समूहों में मशरूम बैग का वितरण भी किया गया।

परिवर्तन परिसर के हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र में महिला कृषक दिवस का आयोजन किया गया। 15 अक्टूबर को सार्वजनिक अवकाश पड़ जाने की वजह से इस दिवस को 20-10-21 को आयोजित किया गया। महिला समाख्या की तरफ से उपस्थित महिलाओं का गीत गाकर स्वागत किया गया। परिवर्तन कार्यक्षेत्र से कुल 46 महिला किसानों की भागीदारी रही।।

इसके बाद हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र से कृषि संचालक विवेक कुशवाहा ने महिला किसान दिवस के महत्व व् महिलाओं का बेहतर स्वास्थ्य कैसे हो,इस विषय पर चर्चा की। महिलाओं को सही पोषण मिले, इसके लिए सभी महिलायें अपने घर के आस-पास पोषक वाटिका का निर्माण करें और खेती से जुड़ कर अपनी बेहतर जीविका के लिए विभिन्न स्रोतों का निर्माण करें, ऐसी समझ बनी।

परिवर्तन के प्रोग्राम मैनेजर श्री अलोक सिंह ने उपस्थित महिलाओं को परिवर्तन की तरफ से संचालित महिला सशक्तिकरण की पहल विषयक जानकारियाँ और महिलाओं को विकास में आगे ले जाने वाले परिवर्तन के प्रयासों की बातें साझा कीं। परिवर्तन से जुड़ी सफल महिला किसानों ने अपनी सफलता की कहानी अन्य महिलाओं के बीच प्रस्तुत कीं। उपस्थित महिलाओं को परिवर्तन की तरफ से पोषक वाटिका निर्माण हेतु सब्जी बीज का वितरण किया गया। अंत में कृषि सहायक बलिन्द्र कुमार ने सभी महिलाओं को धन्यवाद ज्ञापन प्रदान किया।

रेज्ड बेड प्लान्टर से बुआई – कम पानी में अधिक उपज एवं जल जमाव का प्रभाव नहीं

रेज्ड बेड प्लान्टर से ऊँची उठी पट्टी पर मक्का-अरहर की सहफसली बुआई

अरहर की फसलें अत्यधिक वर्षा जल की वजह से उकठ जाती हैं और मक्का की फसल उचित वर्षा जल के अभाव में सूखने लगती है। अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि अरहर एवं मक्का की उठी हुई पट्टी अथवा मेंढ़ पर बुआई करने पर अत्यधिक वर्षा जल का इन फसलों पर कुप्रभाव नहीं पड़ता है, फसलों में जल उपयोग क्षमता बढ़ जाती है और उपज में भी समतल भूमि में बुआई की अपेक्षा अधिक उपज मिलती है। इन तथ्यों को ध्यान में रखकर खेम भटकन के दो किसानों के खेत पर मक्का एवं अरहर की बुआई रेज्ड बेड प्लान्टर से की गयी। किसान इस विधि को देखकर प्रभावित हुए। इन फसलों का जमाव, वृद्धि एवं विकास, समतल खेत में बोई गयी फसलों की तुलना में बेहतर था। अरहर की फसल में उकठा रोग का प्रभाव नहीं दिखाई दिया, जबकी इस वर्ष बारिश बहुत ज्यादा हुई थी।

कृषि बागवानी गोष्ठी का आयोजन -

हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र में दिनांक 29-07-21 को कृषि बागवानी गोष्ठी आयोजित की गई। यह गोष्ठी परिवर्तन की कृषि इकाई, KVK भगवानपुर हांट और मनरेगा जीरादेई प्रखंड ने संयुक्त रूप से आयोजित की।

इस गोष्ठी में कृषि विज्ञान केंद्र की प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अनुराधा रंजन, कृषि वैज्ञानिक डॉ. वरुण कुमार, डॉ. आर. के. मंडल, मनरेगा अधिकारी- श्री ओमकारनाथ, जन हितार्थ किसान उत्पाद समूह के अध्यक्ष, सचिव व परिवर्तन कार्य क्षेत्र से 32 किसानों ने इस गोष्ठी में भाग लिए।

इस गोष्ठी की शुरुआत श्री विवेक कुशवाहा ने की और सभी किसानों का स्वागत कर बतलाया कि किसानों और प्रकृति में सबसे अधिक जुड़ाव रहता है। किसान प्रकृति संसाधनों का संरक्षण कर, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम कर सकते हैं। जीरादेई प्रखंड के मनरेगा अधिकारी श्री ओमकारनाथ जी द्वारा जिले में चल रही, जल

जीवन हरियाली योजना की विस्तृत जानकारियाँ प्रदान की गयीं, साथ-साथ इस योजना से जुड़े किसानों के प्रश्नों का समाधान भी किया गया। कृषि वैज्ञानिक डॉ. वरुण कुमार द्वारा किसानों को वैज्ञानिक विधि से बाग़ लगाने की तकनीकी जानकारी दी गई- उचित स्थान का चयन, पौधों की दूरी, उन्नतशील प्रभेद, आम के बाग में लगाने वाले पौधा रोपण से लेकर फल प्राप्त करने तक की जानकारियाँ प्रदान की गयीं। कृषि विज्ञान केंद्र की प्रधान वैज्ञानिक डॉ अनुराधा रंजन ने किसानों को खेती की नवीनतम तकनीक, फसल चक्र और संतुलित उर्वरक मात्रा के प्रयोग होने वाले लाभ बताए; किसान फसल उत्पादन समूह में करेंगे तो उत्पाद बिक्री में आसानी रहेगी, सोयाबीन, अरहर, सूरजमुखी की वैज्ञानिक खेती के बारे में नवीन जानकारियां प्रदान की गयीं।

धान में हल्दिया रोग (False smut) की समस्या एवं समाधान

धान की फसल में बाल निकलने के बाद अत्यधिक बारिश,तापक्रम में वृद्धि एवं वातावरण में अधिक नमी होने के कारण हल्दिया रोग (False smut) का प्रकोप अचानक बढ़ गया। इस रोग को कन्दुआ भी कहते है इस रोग में धान के दानों पर हल्के पीले रंग की गोली बन जाती है तथा इन्हें तोड़ने पर हल्दी के जैसा चूर्ण निकलता है। इस रोग से उपज एवं गुणवत्ता में कमी आ जाती है तथा बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलता है। हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र की टीम ने एक मुहिम चलाकर परिवर्तन कार्यक्षेत्र के गाँव के किसानों को हेक्साकोनाज़ोल, कॉपर ऑक्सीक्लोराइड रसायन के छिड़काव हेतु जागरूक किया।

परिवर्तन परिसर में रबी कार्यशाला का आयोजन –

परिवर्तन परिसर में दिनांक– 30-09-21 को रबी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इस कार्यशाला में सीसा संस्था पटना से डॉ. अनुराग कुमार तथा परिवर्तन कार्यक्षेत्र से कुल 83 किसानों ने भाग लिया। इस कार्यशाला के संचालक हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र के कृषि संचालक विवेक कुशवाहा ने किसानों का स्वागत किया और रबी कार्यशाला पर प्रकाश डालते हुए कहा- किसान रबी फसलों का चयन अपनी आवश्यकताओं एवं विपणन को ध्यान में रखते हुए करें, साथ ही दलहनी फसलों को अपने फसल चक्र में जरुर सम्मिलित करें। पहले के मुकाबले आये दिन फसलों में भी अनेक प्रकार की बीमारीयां हो रही हैं, इस के लिए किसान बंधू बीज उपचार कर के ही फसल की बुवाई करें। इस कार्यशाला में सीसा संस्था पटना से आये डॉ अनुराग कुमारने किसानों को संबोधित करते हुए जिरोटीलेज मशीन द्वारा संरक्षित खेती के बारे में बतलाया साथ ही किसान को जलवायु अनुकूल फसलों के बुवाई से होने वाले लाभ की विस्तृत रूप से जानकारी दी। फसलों में समेकित पोषक तत्व के महत्व, नई उन्नतशील प्रजातीय प्रयोग कर गेंहू अगेती बुवाई जिरोटिल करने से होने वाले लाभों के बारे में जानकारियां मिलीं।

कार्यक्रम के अंत में जनहितार्थ किसान समूह उत्पाद के अध्यक्ष श्री उमाशंकर सिंह द्वारा आये हुए वैज्ञानिकों एवं किसानों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

जनहितार्थ परिवर्तन किसान उत्पाद समूह (FPO)

बिहार में उर्वरक की कमी की मार झेल रहे किसानों की राहत के लिए जन हितार्थ परिवर्तन किसान उत्पाद समूह काफी हितकारी रहा। किसानों की मांग को देखेते हुए FPO के डायरेक्टर द्वारा समय- समय पर बैठक कर कृषि इनपुट तथा खाद व् बीज मिलता रहा। इससे किसानों को ज्यादा इधर उधर भटकना नहीं पड़ा और आसानी से खाद बीज मिल भी गया। साथ–साथ, आस-पास के बाजार में अधिक दाम पर बिक रहे उर्वरक और कालाबाजारी में काफी कमी देखने को मिली।

किसान दिवस –

किसान दिवस हर साल भारत के 5वें प्रधान मंत्री, श्री चौधरी चरण सिंह की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

इस वर्ष यह दिवस परिवर्तन परिसर में हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र व् किसानों के बीच मनाया गया। इस दिवस पर कुल 51 किसान व् 3 प्रखंड स्तर के अधिकारीयों की भागीदारी रही।

इस दिवस के दिन किसानों के साथ गोष्ठी का भी आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में उपस्थित किसानों का सर्वप्रथम परिवर्तन रंगमण्डली टीम द्वारा "किसान दी जट्टा" गीत से स्वागत किया गया। इसके उपरांत श्री चौधरी चरण सिंह के फोटो पर माल्यार्पण किया गया।

इस दिवस पर हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र के कृषि संचालक विवेक कुशवाहा ने श्री चौधरी चरण सिंह के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके द्वारा किसानों के हित में किये गये सराहनीय कार्यो की चर्चा की साथ ही किसानों से अपील की, कि किसानों को हमेशा परस्पर सहयोग करना चाहिए, तभी जा के किसान समुदाय का बेहतर विकास संभव हो पायेगा। इसी क्रम में जन हितार्थ किसान उत्पाद समूह के सचिव श्री सुधीर श्रीवास्तव ने किसानों को सहकारिता के महत्व व् बढ़ावा पर विशेष जानकरियां प्रदान कीं। प्रखंड स्तर के कृषि अधिकरी डॉ. शंकर सिंह, ने सरकार की तरफ से चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया साथ ही किसानों को योजना का लाभ लेने में आ रही दिक्कत के समाधान हेतु जानकारी प्रदान की। साथ ही किसानों की तरफ से खाद की किल्लत पर वैकल्पिक विकल्पों को लेकर आगे बढ़ने की नसीहत भी दी।

इस दिवस के अवसर पर परिवर्तन हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र से जुड़े किसानों को, कृषि के क्षेत्र में सराहनीय कार्यो के लिए सम्मानित भी किया गया जिससे उनका मनोबल बढ़े व अन्य किसानो में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा उत्पन हो सके।

किसान भाई -रबी की खेती में निम्न बिन्दुओ पर ध्यान दें

गेंहू :

	बुवाई का समय	प्रजाति
अगेती बुवाई	10 नवम्बर से 25 नवम्वर	DBW187, HD3086, HD2733, HD2967, PBW502, HD 2844
पछेती बुवाई	1 दिसम्बर से 15 दिसम्बर	HD2985, HW2045, HD3118, HI1563, HUW234

- अधिकतम उपज के लिए उचित समय पर बुआई हेतु लम्बी अवधि वाली प्रजातियों का चयन करें।
- बिलम्ब की बुआई दिसम्बर के प्रथम पखवाड़े में, कम अवधि वाली प्रजातियों आदि का चयन करे।
- धान की फसल कट जाने के तुरंत बाद उचित नमी पर गेंहू की बुआई जीरो टिल मशीन से करें।
- दिसम्बर में बुआई करना हो तो 25% बीज की मात्रा बढ़ा देनी चाहिए।
- पहली सिंचाई 20-21 दिन पर, दूसरी सिंचाई गांठ बनने की अवस्था अर्थात 70-75 दिन पर तीसरी सिंचाई -दूध आने की अवस्था पर अर्थात 110-115 दिन पर करनी चाहिए।
- अगर एक सिंचाई के लिए ही पानी उपलब्ध हो तो बुआई के 21-25 दिन के बाद करें, अगर दो सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध हो तो पहली सिंचाई 21 दिन बाद एवं दूसरी सिंचाई 110-115 दिन बाद करे।
- गेंहू की शुद्ध फसल में बनरी तथा चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारो के नियंत्रण के लिए टोटल नामक खरपतवारनाशक (सल्फोसल्फ्युरान + मेटसल्फ्युरान) का घोल बनाकर पहली सिंचाई के बाद छिड़काव करें। गेंहू के साथ सरसों की मिश्रित खेती में इस खरपतवारनाशक का प्रयोग न करें।

सरसों :

अधिक उपज देने वाली प्रभेद

राई-पूसा बोल्ड, राजेंद्र अनुकूल, बरुना सरसों –राजेंद्र सरसों 1, सुवर्णा

- सरसों की बुआई 10 से 25 अक्टूबरके बीच करने पर अधिकतम उपज प्राप्त होती है।
- सरसों की बुआई भी जीरो टिल मशीन से की जा सकती है इससे सरसों की बुआई लाइन में होती है जिससे घने पौधों का बिरलीकरण एवं कतार के भीतर निराई-गुड़ाई करने में आसानी होती है तथा फसल में कीटनाशकों का छिड़काव आसानी से हो जाता है।
- बीज शोधन थीरम (2.5 ग्राम /किलोग्राम बीज) से करे।
- बुआई के 10-15 दिन बाद घने पौधों को उखाड़ दें।
- सिंगल सुपर फासफेट अथवा NPKS 20:20:0:13 वाले उर्वरक का प्रयोग बुआई के समय करें। इन उर्वरकों के प्रयोग करने के बाद सल्फर का अलग से प्रयोग करने की जरूरत नहीं होती है।
- सल्फर की 500ग्राम मात्रा प्रति कठा के हिसाब से बुआई के समय खेत में अवश्य डाले।
- फूल आने के पहले तथा दाना भरते समय सिंचाई करनी चाहिए।
- लाही /माहू के प्रकोप होने पर इमिडाक्लोरपिड की 1 मिली/लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

गेंहू के साथ सरसों की मिलवा फसल के प्रभावी बिन्दु

- तथा सरसों की बुआई कतार में जीरो टिल मशीन से करे।
- गेंहू की प्रत्येक 9 कतार के बाद 10वी कतार में सरसों की बुआई करे।
- सरसों के जमाव के बाद घने पौधों को बुआई के 12-15 दिन बाद उखाड़ दें।
- गेंहू के साथ सरसों की मिलवा फसल में बनरी खरपतवार के लिए क्लोडिनाफोप प्रोपाज़िल 15% WP की 160 ग्राम मात्रा प्रति एकड़ के हिसाब से पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- अधिक उपज देने वाली राइ की प्रजाति RH 749 अथवा पूसा विजय की बुआई करे।

क्या आप जानते है ?

- **आइ.सी.ए.आर. -भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी से सब्जी का बीज ऑनलाइन उपलब्ध :**
- **भारतीय स्टेट बैंक आफ इंडिया एवं आइ.सी.ए.आर -भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान,** वाराणसी के वीच एक समझौता हुआ है। इस सन्दर्भ में भारतीय सब्जी अनुसन्धान संस्थान द्वारा रिपोर्ट किया गया है कि अगर आप सब्जी की खेती करना चाहते है अथवा अपने किचन गार्डन को संवारना चाहते हैं तो बीज खरीदने के लिए इधर-उधर जाने की जरुरत नहीं है आप घर बैठे आनलाइन सब्जी के बीज मंगा सकते है।

अनुसंधान के झरोखे से –

अरहर की दो नयी उक्ठा अवरोधी किस्मे विकसित

महत्वपूर्ण सूचना

अरहर की दो नयी उक्ठा अवरोधी किस्मे विकसित

- हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र में मिट्टी जाँच की सुविधा निर्धारित शुल्क पर उपलब्ध है। किसान भाई, मिटटी का नमूना अपने खेत से लेकर उसकी जांच कराएं तथा उर्वरक की संस्तुत मात्रा ही अपनी फसल में प्रयोग करें।
- परिवर्तन पाली हाउस में विभिन्न प्रकार की सब्जी के पौध उचित मूल्य पर उपलब्ध कराये जाते हैं। किसान भाई इसका लाभ उठायें।
- मिटटी पलटने वाला हल, जीरो टिल मशीन, रेज्ड बेड प्लान्टर,रिज प्लान्टर आदि कृषि यन्त्र यहाँ उपलब्ध हैं। किसान भाई ,इन यंत्रो से अपनी खेत की तैयारी तथा फसल बुआई करे।
- किसान सेवा केंद्र में फसलों के उन्नतशील किस्म के बीज, इफ्फको के उर्वरक , कीट नाशक,फफूंद नाशक खरपतवार नाशक रसायन भी उपलब्ध हैं, कृपया लाभ उठायें।

सहयोगी संस्थाएं

- सीरियल सिस्टम इनिसिएटिव फार साऊथ एशिया (सीसा) ,पटना
- भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान ,क्षेत्रीय केन्द्र ,पूसा ,समस्तीपुर
- भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद ,रिसर्च काम्प्लेक्स, पूर्वी क्षेत्र ,पटना
- डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर
- बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर, भागलपुर
- कृषि एवं कृषि से जुड़े सम्बंधित विभाग, सिवान

जन हितार्थ परिवर्तन किसान उत्पादन कम्पनी – एक नया आयाम

- जन हितार्थ परिवर्तन फार्मर्स प्रोडूसर कम्पनी का गठन परिवर्तन क्षेत्र के किसानो के लाभार्थ है। यह आप की संस्था है आप अपना पंजीकरण shareholder(अंशधारक)के रूप में कराएं।
- यह छोटे, सीमान्त एवं भूमिहीन कृषकों का संगठन है। इस संगठन में कम से कम 300 किसान जुड़ने चाहिए , तभी इस योजना का लाभ मिलेगा इस संगठन से जुड़े किसानो को न केवल अपनी उपज का बाजार मिलेगा बल्कि खाद,बीज,कीटनाशक एवं कृषि यंत्र की भी सुविधा मिलेगी तथा बिचौलियो से छुटकारा मिलेगा।
- इस कम्पनी का कार्य देखकर नाबार्ड कंसल्टेंसी सर्विसेज अपनी संस्तुति देंगा उसके आधार पर केंद्र सरकार द्वारा अधिकतम 15 लाख इक्विटी ग्रांट प्राप्त हो सकेगा।

परिवर्तन PARIVARTAN

संपर्क सूत्र
श्री विवेक कुशवाहा
(कृषि सलाहकार)
7236008395
श्री बलिन्द्र यादव
(कृषि सहायक)
7759931043

संबोधन

मै प्रदीप कुमार सिंह ग्राम रुइया बंगरा प्रखंड जीरादेई का निवासी हूँ। मै परिवर्तन हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र से 3 साल से जुड़ा हुआ हूँ। मै परिवर्तन द्वारा बताये कृषि की नवीन तकनीकों के साथ मनरेगा का अनुसरण करता हूँ। साथ ही कृषि गोष्ठी में भी नियमित भाग लेता रहता हूँ। कोरोना दौर में श्रमिकों के आभाव में धान की बुवाई प्रमुख्य समस्या थी। जिस पर परिवर्तन के तकनीकी सहयोग से मैंने धान की सीधी बुवाई जीरोटिल से किया, जिससे काफी अच्छे उत्पादन के साथ-साथ बीज की नर्सरी व् पौधा स्थानांतरण में लगने वाले खर्च में बचत हुई। इस विधि से धान की खेती काफी सस्ता और आसान रहा। अगले वर्ष मै और अधिक मात्रा में इस विधि से धान की बुवाई करूंगा और अन्य किसानों को भी लगाने हेतु प्रोत्साहित करूंगा।

किसानों की सफल कहानी

मै राजेश कुमार ग्राम बाबू भटकन, प्रखंड जीरादेई का निवासी हूँ। मैने परिवर्तन हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र के हस्तक्षेप से कोरोना काल में पोषण सुरक्षा के लिए अपने घर के पास एक पोषक वाटिका का निर्माण किया। जिसमें फसल लगाने के लिए परिवर्तन से सहयोग मिलाता रहा। इस पोषक वाटिका से निकलने वाली सब्जी का घर पर पूरा प्रयोग किया, साथ ही आस पड़ोस में भी वितरण किया। परिणाम सवरूप एक सीजन में 400 सब्जी बीज से मुझे लगभग 5000 तक का सब्जी प्राप्त हुआ। मै अन्य लोगों को भी प्रोत्साहित कर रहा हूँ अन्य व्यक्ति भी परिवर्तन के सहयोग से पोषक वाटिका का निर्माण करें। अपने परिवार में पोषण युक्त भोजन का समावेश करें।